करके सीखने के अवसर देते हैं बाल शोध मेले

– किरन जोशी, रेनू प्रभा

प्रायः हम सभी परंपरागत तरीकों से चली आ रही शिक्षण प्रक्रियाओं में पाठ को पढ़ाने व अभ्यास कार्य पूरा करवाने का काम करते आये हैं। वास्तव में सीखने–सिखाने की इस तरह की प्रक्रियाएं काफी नीरस तथा उबाऊ महसूस होती हैं । एक दबाव होता है बच्चों पर और हम शिक्षकों पर भी कि पाठ को पूरा करना है और इससे जुड़े सवालों को हल करना है। बच्चे प्रायः अधिकांश अवधारणाओं के बारे में पढ़कर रटते हैं। चाहे वे उस अवधारणा से भली–भांति परिचित हो अथवा न हो। हम जानते हैं कि पढ़कर की गयी चीज की खोजबीन करना, सोचना या यूं कहें कि व्यवहारिक रूप से करने में स्थितियां काफी भिन्न हो जाती हैं। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि बच्चे जिस टॉपिक को पढ़ रहे हैं, उसे करके सीखने के भी उनको मौके मिल पायें, बाल शोध मेला इस दिशा में एक नवाचारी पहल लगा।

इस सत्र में हमारे विद्यालय राजकीय प्राथमिक विद्यालय गुरखुड़ा में भी बाल शोध मेले का आयोजन किया गया । बाल शोध मेले में हमारे विद्यालय के बच्चों ने फसलों की जानकारी व फसलों से सम्बंधित त्यौहार आदि थीमों पर अपना शोध कार्य किया। जिस पर बच्चों ने प्रश्न बनाकर फसलों से सम्बंधित जानकारी हमारे साथ जाकर गांव में बातचीत करके स्वयं एकत्र की। इसमें ऐसी–ऐसी जानकारियां प्राप्त हुई जो पहले हमें भी नहीं मालूम थीं, जैसे– एक बीघा जमीन में अरबी कितने किलो बोई जाएगी? एक एकड़ में में सरसों कितनी बोई जाएगी ? खाद कितनी लगेगी? पानी कब और कितना दिया जायेगा? कौन सा त्योहार किस फसल से सम्बंधित है ? आदि आदि– जिसमें हन्ना, असाडी, आदि त्योहारों की जानकारी मिली। इसके साथ हमें यह भी जानकारी मिली कि हमारे गांव का नाम गुरखुड़ा कैसे पड़ा ? साथ ही बच्चों को प्रश्न बनाने तथा लोगों से बातचीत करने का अनुभव तथा अवसर मिला।

बच्चों ने थारू संस्कृति के बारे में गहराई से जानने का प्रयास किया, उनके खान–पान, रहन–सहन, बदलता जीवन आदि की जानकारी प्राप्त की तथा उस जानकारी को मेले में नाटय के रूप में प्रस्तुत किया। जब बच्चों को थारू संस्कृति को नाट्य द्वारा प्रस्तुत करना था तो इसमें समुदाय ने भी बहुत सहयोग किया जिसमें बच्चों के परिधान तैयार करना, वाद्य यंत्रों पर बच्चों की तैयारी आदि जिससे समुदाय भी विद्यालयों से जुड़ता हुआ दिखाई दिया जबकि समुदाय और विद्यालयों को आपस में करीब लाना भी एक चुनौती की तरह दिखाई देता है।

बच्चों द्वारा निम्नलिखित थीम पर शोध कार्य किया गया

- फसलों से सम्बंधित स्थानीय त्योहार

इस पूरी प्रक्रिया में बच्चे त्योहारों तथा उनके कृषि से

सम्बन्ध को समझ पाए। बच्चों ने यह जाना कि जो हमारे त्योहार हैं वो फसलों के पकने के बाद उनकी घर आने की खुशी जाहिर करते हैं तथा वर्ष भर खेतों में की गयी मेहनत के सफल होने पर खुशी मनाते हैं। इससे सम्बंधित त्योहार – झी–झी, हन्ना, असाड़ी, माघी, तीज, होरी, सवैया आदि की जानकारी मिली तथा इन त्योहारों में गाये जाने वाले प्राचीन गीतों से भी परिचित हुए। इनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

हन्ना का गीत

हरो–हरो पेड़ कदम्ब घनी छईयां, कान्हां मुरली बजाएं।
काहेन की रे तेरी बनी रे बसुरिया, काहेंन को सुखैन हरो ।
हरे–हरे बांस की बनी रे बसुरिया, लौका को सुखैन।। हरो।
कै सुर की तेरी बनी रे बंसुरिया, कै सुर को सुखैन।
नौ सुर की तेरी बनी रे बंसुरिया, नौ सुर को सुखैन हरो।

झी झी गीत

रिमझिम–रिमझिम मेघा बरसगो, पवन चलै पुरवैया कि हैं जूं।
पायं रपट मेरो धैला फूटो, कौन देश कै जाऊं कि हैं जूं ।
कौन दिशा से उठी रे बदरिया, कौन दिशा बरसाए कि है जूं।
पूरब दिशा से उठी रे बदरिया, पश्चिम दिशा बरसाए कि है जूं।
काली कुयलिया तू मत बोलै, काहे कै शोर मचाए कि है जूं।
पिया मेरे परदेश गए हैं , सुन–सुन याद सताए कि है जूं।
रिमझिम–रिमझिम... ।

- स्थानीय फसलों की जानकारी

इस थीम के अंतर्गत बच्चों ने जाना कि किस फसल को किस माह में बोया जाता है? कब काटा जाता है। कितना बीज लगता है आदि इसके कुछ विवरण इस प्रकार है–

- स्थानीय व्यंजन

प्रायः जंक फूड के दौर में समाज से स्थानीय व्यंजन लुप्त होते जा रहे हैं ऐसे में बच्चों ने अपने परिवेश में जाकर स्थानीय व्यंजनों के नाम तथा उनको बनाने का तरीका जाना तथा बाल शोध में व्यंजनों को तैयार भी किया गया। जिनमें – आलू का कुचला, मछली का छिद्रा नून, पुटपुरे को साग, ढिस्सा, फरा, गुलगुला, कतला आदि ।

इस प्रक्रिया में यह बात भी समझ में आती है कि ये बाल शोध का उद्देश्य विषय को करके सीखना है । बच्चा जब स्वयं कर के सीखता है तो वह उत्तर देने की, तुलना करने की, वर्गीकरण करने तथा प्रश्न बनाने की दक्षता प्राप्त करता है । तथा अपने आप को आगे विभिन्न विषयों से जोड़कर देख पाता है, जो कि शिक्षा के उद्देश्यों में भी शामिल हैं। साथ ही हमें विद्यालय आने वाले बच्चों को स्थानीय ज्ञान से भी जोड़ना होता है क्योंकि बच्चा इसी परिवेश का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

बाल शोध मेला स्वयं द्वारा अर्जित ज्ञान को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है, अपने द्वारा अर्जित ज्ञान को अभिव्यक्त करने में बच्चे को खुशी होती है। इससे बच्चों का आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान दोनों बढ़ते हैं। बाल शोध की इस रोचक प्रक्रिया से समझ में आया कि इस प्रकार बच्चों के लिए सीखना बोझिल नहीं होता। बच्चों के सीखने–सिखाने का विस्तार होता है। बस जरूरत है बच्चों को अवसर प्रदान करने की।

(किरन जोशी राजकीय प्राथमिक विद्यालय, गुरखुड़ा में प्रभारी प्रधानाध्यापिका हैं और रेनू प्रभा इसी विद्यालय में सहायक अध्यापिका हैं)

तितली

उड़ती फिरती डाली–डाली
रंग बिरंगी तितली प्यारी
पंख फैलाती मुझे बुलाती
पास जाओ तो झट से उड़ जाती
बच्चों के मन को भाती
पास जाओ तो झट उड़ जाती
फूलों का रस पीती
सबको मन भाती
उड़ती फिरती
डाली–डाली रंग बिरंगी
तितली प्यारी पंख फैलाती
मुझे बुलाती।

– काजल कुमारी
कक्षा 5, रा.प्रा.वि., ननूरखेड़ा, देहरादून